शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (२००९)
National Curriculum Framework for Teacher Education (2009)

प्रस्तावना (Introduction) -: स्कूल शिक्षा के लिये राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (२००५) और अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (२००९) द्वारा आधुनिकीकरण, संदर्भ अनुसार करना, और व्यावसायिकता की ओर स्कूल शिक्षा तथा शिक्षक शिक्षा को फिर से जीवंत करने के लिए एक प्रमुख प्रयास २००५ और २००९ में किया गया था। हाल के वर्षों में सीखने की ज्ञान पद्धति तथा शिक्षण शास्त्र में एक बड़ा परिवर्तन आया है; कि सीखने में वास्तविकता की खोज नहीं अपितु वास्तविकता का निर्माण शामिल किया जाने लगा है। ज्ञान और संज्ञानों के लिए निर्माण किये जा रहे हैं और उनके प्रभावों को महसूस किया जा रहा है। सीखना ज्ञान और विचारों का अनिवारक अवशोषण नहीं है, लेकिन विचारों का निर्माण सभी के व्यक्तिगत अनुभवों पर किया जाता है। आज की शिक्षा का उद्देश्य सीखने के रचनावादी दृष्टिकोण की ओर स्थानांतरित कर दिया गया है। एनसी एफ २००५ एक ऐसे शिक्षक की अभिलाषा करता है जो छात्रों के अलग-अलग अनुभवों का उपयोग करके ज्ञान और अर्थ का निर्माण करने में उन्हें मदद करता हो। शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम के पूरे शैक्षणिक दृष्टिकोण को भी इसी अनुशंसा के अन्तर्गत पारंपरिक व्यवहारवादी से रचनावादी प्रवचन पुनर्गिन्यासित करने की आवश्यकता है। शिक्षक शिक्षा के लिये राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (२००९) एनसीएफटीई द्वारा विकासित यह सुनिश्चित करने की कोशिश करती है कि शिक्षक शिक्षा पाठ्य-क्रम ज्ञान-पद्धति शास्त्र एनसी एफ २००५ में परिकल्पित बदलाव के तालमेल के साथ अभिविन्यासित है और सीखने के सुविधाकारक के रूप में शिक्षकों के विकास को सुनिश्चित करने की कोशिश करती है।

इस रूपरेखा से सम्बन्धित प्रमुख चिंताओं में समावेशी शिक्षा, सतत विकास, शिक्षा के क्षेत्र में सामुदायिक ज्ञान का उपयोग, और आई० सी० टी० के एकीकरण और शिक्षक-शिक्षा के पाठ्यक्रम में ई-शिक्षण जो सभी एन०सी०एफ०(२००५) के अनुसार है, शामिल है। इसलिए, शिक्षक तैयार करने के लिए परंपरागत दृष्टिकोण ने 'सावधानी से पाठ्यक्रम की योजना तैयार करने के लिए रास्ता दिया है जो सैद्धांतिक और प्रायोगिक ज्ञान तथा छात्र शिक्षकों पर आधारित है', जो आज हमारे समक्ष 'अनुभवात्मक ज्ञान' के रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है।

Scanned with CamScanner

शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2009) के प्रमुख पक्ष
Main Aspect of National Curriculum Framework for Teacher Education (2009)

शिक्षक शिक्षा और विद्यालयी शिक्षा का एक पारस्परिक तथा अन्योन्य संबंध है जिसमें प्रत्येक एक-दूसरे को प्रभावित करती है। अतः एक अच्छी शिक्षक शिक्षा अच्छे शिक्षकों का निर्माण करेगी और ये शिक्षक अपनी कुशलता से विद्यालयों में पढ़ रहे विद्यार्थियों को एक बेहतरीन शिक्षा प्रदान करेंगे और फलस्वरूप विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार आएगा। इसलिए कहा जा सकता है कि समग्र शिक्षा में गुणात्मक सुधार शिक्षक शिक्षा के पुनरुद्धार के द्वारा ही हो सकता है। अतः हमारी शिक्षा व्यवस्था राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर तीव्रता से बदल रहे शिक्षा के परिदृश्य की अनिवार्यताओं के अनुसार होनी चाहिए। एन०सी०एफ०टी०ई० की अनुशंसा के अनुसार कक्षा I से कक्षा VIII तक से सम्बन्धित शिक्षक शिक्षा के पाठ्यचर्या को निम्न दो अवस्थाओं में विभाजित किया जा सकता है।

अवस्था प्रथम	अवस्था द्वितीय
↓	↓
प्राथमिक स्तर के लिए अध्यापक शिक्षा (कक्षा I से V)	प्रारंभिक स्तर के लिए अध्यापक शिक्षा (कक्षा VI से VIII)

अवस्था प्रथम-: प्राथमिक स्तर के लिए शिक्षक शिक्षा (कक्षा I से V)

तर्काधार

प्रशिक्षण प्रक्रिया या प्रविधि द्वारा शिक्षक का सशक्तिकरण करने की आवश्यकता है ताकि उसे समाज की जटिलताओं और विकासात्मक प्रक्रिया के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का बोध हो सके और वह उन जटिलताओं को समाधान करता हुआ समाज को विकास के उस पथ तक ले चले जहाँ सभी का कल्याण सम्भव हो। जैसा कि हम सभी को विदित है कि आज शिक्षक मात्र अध्यापन कार्य के लिए नहीं अपितु अधिगमकर्ताओं के सुगमकर्ता के रूप में परिणित हो रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क में प्राथमिक शिक्षा के लिए एक लचीला ढाँचा प्रस्तुत किया है जिसमें स्थानीय वातावरण के साथ अनुकूलन की काफी संभावनायें है।

Scanned with CamScanner

पाठ्यक्रम विषय वस्तु

1. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या की रूपरेखा (N.C.F.T.E.) में उल्लिखित "विकासशील भारतीय समाज" नामक पाठ्यक्रम में उन दबाव क्षेत्रों को ध्यान में रखा गया जो NCF, 2005 में सुझाए गए हैं जैसे बच्चों के अधिकार, मानव अधिकार शिक्षा, मूल्य और उनकी सामान्य विशेषताएँ, देश में शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विकास के परिप्रेक्ष्य; विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी समेत विभिन्न क्षेत्रों में विकास प्रक्रिया की महत्वपूर्ण घटनायें इत्यादि। इन सभी का उद्देश्य शिक्षक को उन प्रासंगिक यथार्थ-तथ्यों से अवगत कराना है जिनमें उसे कार्य करना है।

2. अध्यापन और अधिगम के मनोविज्ञान, स्वास्थ्य तथा शारीरिक शिक्षा, विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा आदि पाठ्यक्रमों में वे अनिवार्य सैद्धांतिक घटक हैं जिनकी आवश्यकता अध्येता, समुदाय, तथा समाज को समझने के लिए पड़ती है। इनमें आंतरिक तथा बाह्य-चरों का भी हस्तक्षेप है जो विद्यालय के वातावरण को प्रभावित करते हैं; साथ ही साथ उन कारकों का भी उल्लेख है जो अध्येता को प्रभावित करते हैं।

3. विद्यालय संगठन तथा प्राथमिक विद्यालयी विषयों को शिक्षणात्मक विश्लेषण भी अनिवार्य है क्योंकि ये सभी एक शिक्षक के रूप में कार्य करने के लिए ठोस आधार प्रस्तुत करते हैं।

प्रशिक्षण

1. प्रशिक्षण कार्य में इस विषय पर अधिक ज़ोर दिया गया है कि सिद्धान्त के साथ-साथ उसके व्यवहारिक पक्ष पर भी अन्योन्यक्रियात्मक संबंध स्थापित किये जायें।

2. अधिगम के पाठ्यचर्यात्मक क्षेत्रों तथा विद्यालय से बाहर उपस्थित वातावरण के मध्य सम्बन्ध स्थापित किया जायें।

3. शिक्षकों को अपने शिक्षण कार्य में बहुत-सी नवीन एवं गम्भीर समस्याओं से भी जूझना पड़ता है। अतः आवश्यकता है कि उन सभी मुद्दों को संबोधित किया जाये जिससे एक शिक्षक गुजरता है तथा अपने विवेक से उन समस्याओं को सुलझाता है। अतः प्रशिक्षण कार्य में 'क्रियात्मक शोध' का समावेश करना आज के समय की एक प्रमुख आवश्यकता है।

राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्या की रूपरेखा में यह सुझाया गया है कि विभिन्न राज्य अपनी आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को संगतता प्रदान करने के लिए अतिरिक्त क्षेत्र भी जोड़ सकते हैं।

Scanned with CamScanner

पाठ्यचर्या संचालन

पाठ्यचर्या संपादन के तीनों घटकों - सिद्धान्त, शिक्षणशास्त्र तथा प्रायोगिक कार्य, को सोच-समझ कर स्वीकृत करने की आवश्यकता है। इन सभी का सम्बन्ध नीचे उल्लिखित किया जा रहा है।

- सिद्धान्त -: सैद्धान्तिक रूप में पाठ्यचर्या संपादन में अन्योन्याक्रियात्मक, सहभागी तथा क्रिया-उन्मुख उपागम पर बल दिया गया है। इसमें व्याख्यान, चर्चा, सेमिनार, मीडिया सह अध्यापन, ट्यूटोरियल, ई-लर्निंग, स्व-अध्ययन तथा प्रायोगिक क्रियाकलाप सामिलित है। प्रशिक्षण की अवधि में विषय आधारित ज्ञान को उचित महत्व दिया गया है।

- शिक्षणशास्त्र -: शिक्षण-शास्त्र का सम्बन्ध इस विषय से है कि कोई शिक्षक किस प्रकार पढ़ाता है। अध्यापन कार्य एक कला है जो यह सुनिश्चित करती है कि उसके छात्र भविष्य में किस रूप में पल्लवित होंगे। अतः प्रभावी अध्यापन एक विज्ञान, एक कला है जिसका सम्बन्ध विषयवस्तु के अनुसार उपयुक्त अध्यापन विधियों के संचालन या स्वीकरण से है। शिक्षण-शास्त्र एक अध्यापक की उद्देश्यों, कक्षा प्रबंधन, तथा मुल्यांकन व्यूहरचनाओं को समझने में सहायता प्रदान करता है।

- प्रायोगीक क्रियाकलाप -: सैद्धान्तिक अवधारणाओं को मूर्त रूप देने के लिए प्रायोगिक कार्य एक अनिवार्य घटक है। अतः NCFTE भी इस विषय की अनुशंसा करता है कि प्रायोगिक क्रियाकलाप सैद्धान्तिक भाग के प्रत्येक पक्ष पर आयोजित किये जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त, प्रायोगिक क्रियाकलाप जो विभिन्न विद्यालयी अनुभवों, कार्य शिक्षा, विद्यालय समुदाय अन्योन्याक्रिया, क्रियात्मक शोध संबंधी परियोजनायें जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को एक नई दिशा प्रदान करती है, भावी शिक्षकों द्वारा समय-समय पर संपादित किए जायेंगे।

मुल्यांकन

जैसा कि हम सभी को विदित है कि मुल्यांकन का उद्देश्य यह निर्धारित करना है कि अपेक्षित उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है अथवा नहीं। मुल्यांकन पद्धति में सिद्धान्त, अध्यापन अभ्यास तथा प्रायोगिक कार्यों के संबंध में प्रशिक्षण कार्यक्रम की अपेक्षित निष्पत्तियों को ध्यान रखना चाहिए। अतः मुल्यांकन अध्यापन प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में किया जाना चाहिए जैसा कि सतत एवं व्यापक मुल्यांकन में भी बताया गया है। इस विषय को ध्यान में रखते हुए यह भी महसूस किया जाता रहा है कि बाह्य परीक्षाओं को डर

Scanned with CamScanner

हटाकर आंतरिक सतत तथा व्यापक मूल्यांकन पद्धति स्थापित की जाए। इन सभी को ध्यान में रखते हुए सतत और व्यापक मूल्यांकन प्रणाली, बाह्य परीक्षा को हटाए बिना आंशिक रूप में लागू करने का प्रावधान किया गया है। क्योंकि बहुत से व्यक्ति अभी भी बाह्य परीक्षाओं को पूर्ण रूप से हटाने के पक्ष में नही है।

मूल्यांकन के उपकरण-:

प्रत्येक पक्ष को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त मूल्यांकन उपकरणों का चयन करना आवश्यक है, जैसे-:

1. पेपर-पैन परीक्षण जिसमें वस्तुगत आधारित प्रश्न हो। इसके अतिरिक्त निबंधात्मक, लघु उत्तर प्रकार तथा वस्तुगत प्रकार के प्रश्नों का एक संतुलित रूप हो।
2. मौखिक परीक्षाएँ, पोर्टफोलियों आदि।
3. निष्पादन आधारित जैसे शिक्षण अभ्यास, विभिन्न क्रियाकलाप में सम्मिलित होना, जिनका मापन चेक लिस्ट, रेटिंग स्केल तथा शेड्यूल आदि से किया जा सके।

अवस्था द्वितीय-: प्रारंभिक स्तर के लिए शिक्षक शिक्षा (कक्षा VI से VIII तक)

तर्काधार

"शिक्षा का अधिकार" अधिनियम का विकास 6 से 14 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों को नि:शुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने की संवैधानिक प्रतिबद्धता से हुआ है। इस आयु वर्ग के अन्तर्गत पियाजे द्वारा प्रतिपादित विकास की स्थूल संक्रियात्मक अवस्था से अमूर्त तर्कणा प्रक्रिया तक का एक क्रमिक परिवर्तन सम्मिलित है। अत: यह अनिवार्य हो जाता है कि अध्यापन और अधिगम प्रक्रियाओं में परिवर्तन तथा अध्यापन-अधिगम व्यूहरचनाओं में क्रमिक परिवर्तन अध्येताओं की परिपक्वता से मेल खाते हुए एक अवस्था से दूसरी अवस्था में होना चाहिए।

पाठ्यक्रम विषय वस्तु

1. विकासशील भारतीय समाज में शिक्षा नामक पाठ्यक्रम के अध्ययन से भावी अध्यापक समाज की उन अपेक्षाओं को समझ सकें जिन्हें समाज शिक्षा के माध्यम से पूरा करना चाहता है। इस अवस्था पर "भारत में प्रारंभिक शिक्षा" के पाठ्यक्रम के अंतर्गत, "स्थिति, समस्याएँ तथा मुद्दे प्रस्तावित है जो अध्यापकों में यह परखने की योग्यता का विकास करेंगे कि क्या ये अपेक्षाएं पूरी हो सकती है??
2. अध्यापन तथा अधिगम का मनोविज्ञान नामक पाठ्यक्रम के आधार पर आप इस योग्य हो जाएंगे कि आप बच्चों में अधिगम को प्रोत्साहित करने के लिए उपयुक्त अध्यापन कार्यविधियों का निर्माण कर सकें।

Scanned with CamScanner

3. स्वास्थ्य तथा शारीरिक शिक्षा पर पाठ्यक्रम इस योग्यता का विकास करेगा जिससे आप अच्छे शारीरिक विकास के लिए व्यायाम आदि की योजना बना सकेंगे। इसके आधार पर आप विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की भी सहायता कर सकते हैं।

4. निर्देशन और परामर्श पाठ्यक्रम आपको इस योग्य बना सकेगा कि उन बच्चों की सहायता कर सकेंगे जो किसी न किसी प्रकार की समस्याओं से ग्रसित रहते हैं।

प्रशिक्षण

भावी शिक्षकों को इस रूप में तैयार करना चाहिए ताकि वे अध्यापन पूर्व, अध्यापन अवधि तथा अध्यापन पश्चात् के चरणों में अपना कार्य सफलतापूर्वक संपादित कर सकें। इसके लिए निम्नलिखित क्षमताएं विकसित करने की आवश्यकता है –

1. क्रियात्मक शोध: इससे अध्यापकों में समस्या समाधान की क्षमता का विकास होगा।

2. शिक्षण-शास्त्रीय विश्लेषण (पेडागोजिकल विश्लेषण): इस योग्यता के विकास के फलस्वरूप भावी अध्यापक प्रारंभिक स्तर पर विषयों को पढ़ाने में निहित जटिलताओं को समझ सकेंगे। इससे वे शैक्षिक व्यूहरचनाओं की योजना बना सकेंगे। एक वास्तविक कक्षा वातावरण में प्रतिरूप पाठ (model lesson) और अध्यापन अभ्यास का विवेचित प्रेक्षण एक प्रभावी और सक्षम अध्यापक के निर्माण में सहायक होगा।

3. किसी विद्यालय में किया गया इंटर्नशिप आपको विभिन्न प्रकार के ऐसे अनुभव प्रदान करेगा जो किसी विद्यालय में काम करने के लिए अनिवार्य है।

4. विद्यालय समुदाय अन्तःक्रिया न केवल दोनों के अन्योन्यक्रियात्मक सहारे को प्रोत्साहित करेगी, अपितु इसके द्वारा बच्चों के लिए एक उपयुक्त शिक्षण-शास्त्र का विकास भी कर पाएंगे। शैक्षिक क्रियाकलाप का आयोजन आपमें उस क्षमता का विकास करेगा जिससे आप उन सभी क्रियाकलाप की योजना और कार्यान्वयन कर सकेंगे जो बच्चे के विकास के लिए अनिवार्य होती है।

पाठ्यचर्या संचालन

पाठ्यचर्या का संचालन निम्न उल्लिखित भागों में संपादित किया जा रहा है –

- सिद्धान्त –: पाठ्यचर्या संपादन के लिए भली-भाँति विवेचित तथा अभिकल्पित विभिन्न उपागमों, जैसे- व्याख्यान-चर्चा, सहभागी अध्ययन, प्रायोगिक तथा निदर्शन तकनीक, स्व-अध्ययन, तकनीक तथा परियोजनाओं, विभिन्न कार्यनीतियों तथा शैक्षणिक सामग्री को संयोजित करें, सहायक मीडिया का प्रयोग करें, अधिक से अधिक सक्रिय/सहभागी क्रियाकलाप की योजना बनाएं, क्षेत्र भ्रमण तथा दौरे आयोजित करें।

- शिक्षण शास्त्र –: अध्यापन और अधिगम प्रक्रिया के दौरान वर्तमान अध्यापन तकनीकें तथा कार्यनीतियाँ, स्वतंत्र अध्ययन, स्वःखोज व स्वःअध्ययन को प्रोत्साहित नहीं करती है। इन उपागमों में भावी अध्यापकों की भागीदारी कम से कम होती है और अधिकांशतः अध्यापन एकतरफा संप्रेषण मात्र होकर रह जाता है। यहाँ तक कि सहकारी अधिगम उपागम को भी व्याख्यान विधि से ही पढ़ाया जाता है। उपर्युक्त व्यूहरचनाएं तथा तकनीकें भावी अध्यापक को उनके अपने विद्यार्थियों पर अभ्यास करने में सहायता करती हैं क्योंकि वे इनके प्रयोग का प्रत्यक्ष निदर्शन (Demonstra-tion) कर पाते हैं।

Scanned with CamScanner

- अध्यापन अभ्यास (Practice Teaching): पाठ्यचर्या संपादन की प्रक्रिया में सुधार और परिवर्तन की आवश्यकता है। अध्यापन विषयों के शैक्षणिक विश्लेषण से निश्चित रूप से अध्यापन और अधिगम में सूक्ष्मता एवं परिमार्जन आएगा क्योंकि यह अध्यापन के निष्पादन को रूपांतरित कर उन योग्यताओं का विकास करेगा जो मात्र विषय-वस्तु को पढ़कर नहीं प्राप्त की जा सकती अपितु इसके लिए वास्तविक परिस्थितियों की आवश्यकता है। अतः शिक्षण-शास्त्र विश्लेषण की अवधारणा में छात्र-शिक्षकों द्वारा दिए गए प्रतिरूप तथा पाठ प्रदर्शन के साथ, कक्षा का निष्पादन निश्चित रूप से सुधरेगा, यदि इसका पर्यवेक्षण विषय-विशेषज्ञ द्वारा किया जाए।
- प्रायोगिक कार्य-: कार्य शिक्षा प्रायोगिक कार्य का एक महत्वपूर्ण घटक है, और इसकी अंतः शक्तियों का उपयोग चरित्र के कुछ गुणों का विकास करने के लिए अध्यापक शिक्षा द्वारा करना होगा। पारस्परिक रूप से समर्पित विद्यालय-समुदाय अन्योन्यक्रिया उपयुक्त अध्यापन व्यूहरचनाओं का विकास करने में अध्यापकों की सहायता कर सकती है।

अध्यापकों को विद्यालय में शैक्षिक क्रियाकलाप आयोजित करने होते हैं अतः उन्हें संपूरक सामग्री का प्रयोग कर सकने के लिए प्रशिक्षित करना होगा। जो विद्यार्थियों में अधिगम को प्रोत्साहित करने और उसमें तेजी लाने के लिए अपेक्षित है।

मूल्यांकन

इस अवस्था पर मूल्यांकन सदैव सतत, रचनात्मक तथा व्यापक हो ताकि अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में परिवर्तन लाया जा सके। क्रमबद्ध मूल्यांकन के द्वारा अध्यापक उपयुक्त अध्यापन तकनीकों का चयन करने में सक्षम हो सकेगा तथा पाठ्यचर्यात्मक प्रक्रिया में अपेक्षित परिवर्तन ला सकेगा।

प्रारंभिक स्तर पर छात्र-अध्यापक/छात्र-शिक्षक का मूल्यांकन प्राथमिक अवस्था पर उसके मूल्यांकन से कोई अधिक अलग नहीं होगा और लगभग वही सिद्धान्त तथा पद्धतियाँ जो प्राथमिक अवस्था के लिए अपनाई गई थी इस अवस्था के लिए भी उतनी ही उपयुक्त होगी।

मूल्यांकन के उपकरण

पाठ्यचर्या संपादन की सफलता या असफलता इस बात से जानी जाती है कि मूल्यांकन में वैध और विश्वसनीय उपकरणों का प्रयोग हुआ है अथवा नहीं। इन मूल्यांकन उपकरणों से पहले ही अवगत कराया जा चुका है।

Scanned with CamScanner